(कहानी–संग्रह)

चुनौती

डॉ. तेजपाल सिंह

कहानी

चुनौती

डॉ. तेजपाल सिंह

चुनौती

अजय छुट्टियों में लगभग बीस साल बाद सुदूर देहात के गाँव नरपत खेड़ा जाता है। नरपत खेड़ा जिला मुख्यालय से 70-80 किमी. दूर था। मोटर मार्ग से लगभग बीस किमी. कच्ची सड़क का सफर तय करके नरपत खेड़ा पहुँचा जाता था। रास्ते में दूर-दूर तक रेतीले टीले और उन टीलों पर बेर की झाड़ियाँ उगी हुई थीं। खेतों की मेड़ों पर सरकण्डे के झूँढ़ उगे हुए थे। कच्ची सड़क से कुछ हटकर आमों का बगीचा था। राहगीर चलते-चलते जब थक जाया करते थे तो बगीचे में आराम करके आगे की यात्रा करने के लिए उनके शरीर में ऊर्जा का संचार हो जाया करता था। बगीचे में कुंआ था। राहगीर अपने झोले में से लोटा-डोर निकालकर कुएं से पानी निकाल कर पिया करते थे। धीरे-धीरे इस बगीचे का नाम प्याऊ वाला बाग पड़ गया था।

अजय मुख्य सड़क से अपने गाँव नरपत खेड़ा तक की यात्रा घोड़े-ताँगे से करता है। घोड़े ताँगे का प्रति व्यक्ति किराया बीस रुपये था। अजय घोड़ा-ताँगा दो सौ रुपयों में तय कर लेता है। अजय घोड़े वाले से पूछता है तुम्हारा नाम क्या है? हमारो नाम साब रग्घू कुम्हार है। अजय ने कहा, 'तो तुम अब मिट्टी के बर्तन नहीं बनाते हो।' रग्घू ने बताया का बताएँ साब आपको, हमारे बापू ने मिट्टी के बर्तनों को बेच-बेच कर ही हम चार भाई-बहनन को पालो-पोसो और शादी-ब्याह करे। अब लोग बाग शादी-ब्याहन में कुल्हड़न-पत्तरन की जगह प्लास्टिक की थारी, गिलास ले आवत हैं। साब परिवार बड़ो है गयो है।

मेरो भैया तो दिल्ली चलो गओ है। मैं घोड़ा ताँगो चलावत हों, तीन-चार बीघा जमीन है। ऐसे ही दिन कटत जात हैं। बातों-बातों में न जाने कब प्याऊ वाला बाग आ गया। अजय और रग्घू ने बगीचे में कुछ देर विश्राम किया, पानी पिया और फिर आगे की यात्रा की।

अजय ने जब गाँव छोड़ा था। उस समय की उसे कुछ-कुछ यादें थीं। गाँव में मिट्टी के मकान हुआ करते थे। गर्मियों के दिनों में गाँव वाले अपने मकानों की लिपाई-पुताई किया करते थे। अब गाँव में बहुत कम कच्चे मकान रह गए थे। पक्के मकान बिना प्लास्टर के थे। पूरे गाँव में दो-चार मकानों पर ही प्लास्टर करके सफेदी की हुई थी।

अजय के पिता धनीराम और माता देवकी चार बीघा खेतों पर खेती किया करते थे। देवकी ने छः बच्चों को जन्म दिया। पहला लड़का चैदह साल में मर गया। एक के बाद एक संतानें होती गई

और मरती गई। जब सबसे छोटा लड़का अजय पाँच-सात साल का था, तब तक धनीराम कर्ज में डूब चुका था। धनीराम का एक भतीजा गंगू घर से झगड़ा करके गाँव से भाग गया था। वह तीन-चार साल में लौटा तो खूब पैसे थे, उसके पास। देवकी गंगू से कहती है बेटा अपने साथ हमें भी ले चल अब यहाँ गुजारा नहीं हो पा रहा है। धनीराम अपने खेत गिरवी रखकर एक रात देवकी और अपने बेटे को साथ लेकर रात में बीस किमी. पैदल चलकर मुख्य मार्ग पर बस से चले जाते हैं।

सन् 1947 में देश आजाद हुआ और भारत पाकिस्तान में बँट गया। बड़े पैमाने पर कत्ले आम हुआ। पाकिस्तान से आए लोगों को उत्तर-प्रदेश की तराई में बसाया गया। ज्यादातर शरणार्थी पंजाबी थे। पंजाबियों ने नए सिरे से जीवन शुरु किया। अपना घर-बार सब छूट गया था। सरकार ने जीवन यापन करने के लिए इन्हें जमीनें आवंटित की। इन्होंने अपने खेतों में ही घास-फूस की झोपड़ियाँ बनाई। धीरे-धीरे जीवन ढर्रे पर चल पड़ा। सन् 1960-70 तक झोपड़ियाँ पक्के मकानों में बदलने लगी। खेती हल बैल की बजाए ट्रेक्टर से होने लगी।

गंगू अपने चाचा धनीराम, चाची देवकी को इसी तराई इलाके में ले आता है। वह खुद एक पंजाबी के यहाँ नौकरी करता है। धनीराम और देवकी दिन-रात खेतों में काम करते हैं। अजय स्कूल में पढ़ने लगता है। पढ़-लिख कर अजय का भारतीय प्रशासनिक सेवा में चयन हो जाता है। वह देहरादून में कोठी बनवाता है। उसके पिता और माता की मृत्यु हो चुकी है। प्रशासनिक सेवा में आने के बाद अजय का विवाह फौज के कर्नल जैल सिंह की बेटी निरंजना के साथ हो जाता है। निरंजना हाई कोर्ट में वकील है। अजय अपने गाँव नरपत खेड़ा में जाने के लिए अपनी पत्नी निरंजना से चलने को कहता है। निरंजना किसी केस में व्यस्त होने के कारण अजय के साथ नहीं जा पाती है।

अजय अपने गाँव में जाकर सोचता है कि गाँव में आया हूँ तो अपने रिश्तेदारों से भी मिल लेता हूँ, फिर पता नहीं कब आना होगा। वह गाँव से दो-तीन किमी. दूर अपने मामा के घर जाता है। मामा की मृत्यु हो चुकी थी। उनके तीन बेटे थे। आँगन में नीम का पेड़ था। उसके नीचे चारपाई बिछी हुई थी। अजय को खाना खाने के लिए घर के चैके में बुलाया गया। खाना खाते समय उसकी नज़र आले में रखी एक किताब पर पड़ी। खाना खाने के बाद उसने किताब को देखा उस पर रूहेलखंड विश्वविद्यालय लिखा था। वह किताब समाजशास्त्र बी.ए. द्वितीय वर्ष की थी। अजय ने परिवार के सभी सदस्यों की तरफ ध्यान दौड़ाया कि बी.ए. में कौन पढ़ता होगा। मामा के तीनों बेटे निरक्षर थे। बेटों के अलावा परिवार में सभी सदस्य चालीस साल से ऊपर के थे। इस सुदूर देहात में कोई बी.ए. का विद्यार्थी भी हो सकता है? उन्हें आश्चर्य हुआ।